NCERT की नई पाठ्यपुस्तक **दीपकम्** पर आधारित

संजीव® रिफ्रेशर

संस्कृत दीपकम्

कक्षा-8 के विद्यार्थियों के लिए

लेखक : डॉ. जितेन्द्र अग्रवाल

मुख्य विशेषताएँ

1. पाठ-परिचय
2. मूल पाठ, अन्वय, कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद
3. पठित अवबोधनम्
4. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नोत्तर
5. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
6. व्याकरण
7. रचनात्मक कार्य
   - चित्राधारित-वर्णनम्
   - संस्कृत में लघु रचना-कहानी
   - निबन्ध-लेखनम्
   - अनुच्छेद-लेखनम्
   - पत्र-लेखनम्
   - संवाद लेखनम्
8. अपठित अवबोधनम्

₹ मूल्य : 300.00

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★★★★★★

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को किसी भी रूप में फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, या किसी अन्य माध्यम से, या किसी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया या यांत्रिक में शामिल करना कॉपीराइट का उल्लंघन माना जायेगा।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथमः खण्डः—दीपकम्

1.	संगच्छध्वं संवदध्वम्	1
2.	अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका	12
3.	सुभाषितरसं पीत्वा जीवनं सफलं कुरु	31
4.	प्रणम्यो देशभक्तोऽयं गोपबन्धुर्महामनाः	47
5.	गीता सुगीता कर्तव्या	62
6.	डिजिभारतम्-युगपरिवर्तनम्	76
7.	मञ्जुलमञ्जूषा सुन्दरसुरभाषा	91
8.	पश्यत कोणमैशान्यं भारतस्य मनोहरम्	105
9.	कोऽरुक्? कोऽरुक्? कोऽरुक्?	122
10.	सन्निमित्ते वरं त्यागः (क-भागः)	141
11.	सन्निमित्ते वरं त्यागः (ख-भागः)	154
12.	सम्यग्वर्णप्रयोगेण ब्रह्मलोके महीयते	165
13.	वर्णोच्चारण-शिक्षा १	176

द्वितीयः खण्डः—व्याकरण भागः

1.	वर्ण-विचारः	190
2.	सन्धि-प्रकरणम्	193
3.	उपसर्गः	201
4.	प्रत्ययज्ञानम्	209
5.	शब्दरूपाणि	228
6.	संख्याज्ञानम्	249
7.	धातुरूपाणि	260
8.	समास-ज्ञानम्	277
9.	कारक तथा उपपद विभक्तियाँ	287
10.	अव्यय-ज्ञानम्	297

11. समय-लेखनम् 304
12. अशुद्धिः-संशोधनम् 310

तृतीयः खण्डः—रचना भागः

1. चित्राधारित-वर्णनम् 319
2. संस्कृत में लघु रचना-कहानी 328
3. निबन्ध-लेखनम् 331
4. अनुच्छेद-लेखनम् 335
5. पत्र-लेखनम् 338
6. संवाद-लेखनम् 346
● **अपठित-अवबोधनम्** 350

प्रथमः खण्डः—दीपकम् (कक्षा 8)

प्रथमः पाठः

1

संगच्छध्वं संवदध्वम्

(मिलकर चलें मिलकर बोलें)

पाठ-परिचय

वार्तालाप की विधा के अनुसार पाठ आचार्य एवं छात्र-छात्राओं के संवाद में छात्र सम्मानार्थ आचार्य से नमस्ते करते हैं और आचार्य जी को विद्यालय के क्रीड़ा-खेल-उत्सव में फुटबाल खेल में अपनी विजय से अवगत कराते हैं। छात्रों को आशीर्वाद देने के पश्चात् आचार्य प्रतिद्वन्द्वी टीम की हार के विषय में छात्रों से पूछते हैं। छात्र प्रत्युत्तर में अपने दल के खेलने वालों में परस्पर उचित सामंजस्य का वर्णन करते हैं परन्तु विपक्षी समूह में इसका अभाव था। यह सत्य है, आचार्य! उस दल के खिलाड़ियों में परस्पर मन-भेद और द्वेष भाव था। उन्होंने एक-दूसरे के प्रति सहयोग नहीं किया। आचार्य पूछते हैं कि विजय-प्राप्ति के लिए क्या-क्या आवश्यक है? मिलकर कार्य करना, एकता और आपस में सामंजस्य आवश्यक है। उचित ही कहा गया है। यही संदेश वेद में '**संगच्छध्वं संवदध्वम्**' इस प्रकार दिया गया है। एक छात्र पूछता है—हे आचार्य! किस वेद से यह संदेश लिया गया है और इसका क्या अभिप्राय (अर्थ) है?

आचार्य कहते हैं—ऋग्वेद में यह 'संज्ञान-सूक्त' के मंत्रों का अंश-मात्र है। यह 'संघटन-सूक्तम्' इससे भी प्रसिद्ध है। आचार्य इस सूक्त के तीन प्रसिद्ध मंत्रों को पढ़ाते हैं।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद ब्रह्मा जी के मुख से उच्चरित अत्यधिक पवित्र वाणी है। वेद चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। यह वेद विश्व के प्राचीन साहित्य के रूप में विद्वानों द्वारा माना गया है। सबको स्नान करके, शुद्ध वस्त्र धारण कर, जूतों को बाहर रखकर इस प्रार्थना सभा में उपस्थित होना होता है। अतः हाथों को प्रणाम मुद्रा में करके, आँखें बन्द करके, एकाग्रचित्त से, एक ही स्वर में इन वेद मंत्रों का उच्चारण करते हैं।

मूलपाठस्य अवबोधनम्

(मूल पाठ, शब्दार्थ, सरलार्थ और पठितावबोधनम्)

वार्तालाप

(क) नमस्ते आचार्य! अस्माकं विद्यालयस्य क्रीडोत्सवे पादकन्दुक-क्रीडायां वयं विजयं प्राप्तवन्तः।

वर्धापनानि, अभिनन्दनं भवताम्। अपि भवन्तः जानन्ति यत् भवतां प्रतिद्वन्द्विनः कथं पराजिताः?

आम्, जानामि आचार्य! अस्माकं दलस्य क्रीडकेषु परस्परं सम्यक् सामञ्जस्यम् आसीत्, किन्तु विपक्षि-दले तत् नासीत्।

सत्यम् आचार्य! तस्य दलस्य क्रीडकेषु परस्परं मनोभेदः द्वेषभावः च आसीत्। ते अन्योन्यं सहयोगं न कृतवन्तः।

तर्हि वदन्तु, विजयप्राप्त्यर्थं किं किम् आवश्यकम्? (पृष्ठ 1)

कठिन-शब्दार्थाः—अस्माकम् = हमारे (ours)। **क्रीडोत्सवे** = खेल के उत्सव में (in celebration of sports)। **पादकन्दुक** = फुटबाल (football)। **प्राप्तवन्तः** = प्राप्त की (achieved)। **वर्धापनानि** = उत्सवरूप में मनाना (celebrate with festivity)। **अभिनन्दनम्** = स्वागत है (welcome)। **प्रतिद्वन्द्विनः** = प्रतिस्पर्धी (opponent)। **सम्यक्** = उचित प्रकार से (nicely)। **सामञ्जस्यम्** = समरसता (harmony)। **द्वेषभावः** = बैर-भाव (enmity)। **सहयोगम्** = सहायता (co-operation)। **कृतवन्तः** = किया (done)।

सरलार्थ—हे आचार्य, नमस्ते। हमारे विद्यालय के खेल उत्सव में फुटबाल खेलने में हमने विजय प्राप्त की।

आचार्य ने कहा—उत्सव मनाने की बात है, आप सभी का अभिनन्दन है। क्या आप जानते हैं कि आपके विरुद्ध खेलने वाले क्यों हारे?

हाँ जी, आचार्य, जानता हूँ। हमारे समूह के खिलाड़ियों में परस्पर समरसता थी, किन्तु विपक्षी समूह में वह नहीं था।

सत्य है आचार्य! उस समूह के खिलाड़ियों में आपस में मन में भेद और बैर भाव था। उन्होंने एक-दूसरे की सहायता नहीं की।

फिर बताओ, विजय प्राप्ति के लिये क्या-क्या आवश्यक है?

(ख) मिलित्वा कार्यकरणम्, एकता, परस्परं सामञ्जस्यं च आवश्यकम्।
सत्यम् एव उक्तम्। एष एव सन्देशः वेदे 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' इत्येवं प्रदत्तः।
आचार्य! कस्मात् वेदात् गृहीतः एष सन्देशः? कः च अस्य अभिप्रायः?
ऋग्वेदे—'संज्ञान-सूक्तस्य' एषः मन्त्रांशः। एतत् 'संघटन-सूक्तम्' इत्यपि प्रख्यातम्। आगच्छन्तु, वयम् अस्य सूक्तस्य प्रसिद्धान् त्रीन् मन्त्रान् पठामः। (पृष्ठ 1)

कठिन-शब्दार्थाः—मिलित्वा = मिलजुलकर (Altogether)। **संगच्छध्वम्** = मिलकर चलो (may you walk together)। **संवदध्वम्** = सहमतिपूर्वक बोलें (may you speak in one voice)। **मंत्राशः** = मंत्र का अंशमात्र (only a tiny part of a mantra)। **प्रख्यातम्** = प्रसिद्ध (famous/popular)। **त्रीन्** = तीन (three)।

सरलार्थ—मिलकर कार्य करना, एकत्व भाव होना और आपसी सहयोग विजय प्राप्ति के लिये आवश्यक है।

सत्य ही कहा है। यही सन्देश वेद में 'संगच्छध्वं संवदध्वम्' (मिलकर चलें मिलकर बोलें) इस प्रकार दिया गया है।

हे आचार्य! यह सन्देश किस वेद से लिया गया है? और इसका अर्थ/मतलब क्या है?

ऋग्वेद में—'संज्ञान-सूक्त' का यह केवल मंत्रांश है। यह 'संगठन-सूक्त' इस प्रकार भी प्रसिद्ध है। आइये, हम सब इस सूक्त के प्रसिद्ध तीन मंत्र पढ़ते हैं।

(1)

प्राचीन-भारतीयज्ञान-परम्परायां 'वेदः साक्षात् ब्रह्ममुखनिःसृता पवित्रतमा दैवी वाक्' इति मन्यते। वेदस्य चत्वारः संहिताः सन्ति—ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः चेति। इमे वेदाः अद्य विश्वस्य प्राचीनतम-साहित्य-रूपेण विद्वद्भिः मन्यन्ते। भवन्तः सर्वे स्नात्वा, शुद्धवस्त्राणि परिधाय, पादत्राणं बहिः स्थापयित्वा, अस्यां प्रार्थनासभायां समुपस्थिताः सन्ति। अतः आगच्छन्तु, प्रणामाञ्जलिं कृत्वा, नेत्रे मीलयित्वा, एकाग्रचित्तेन, समवेतस्वरेण च वेदमन्त्राणाम् उच्चारणं कुर्मः— (पृष्ठ 2)

कठिन-शब्दार्थाः—साक्षात् = समक्ष/प्रत्यक्ष (direct/manifest)। **निःसृता** = निकले हुए (derived/originated)। **पवित्रतमा** = अत्यधिक पवित्र (very much sacred)। **दैवी वाक्** = वाणी की देवी (goddess of speech)। **चत्वारः** = चार (four)। **विद्वद्भिः** = विद्वानों के द्वारा (by the scholars)। **विश्वस्य** = संसार के (of

the whole world)। **परिधाय** = धारण करके (to wear)। **बहिः** = बाहर (outside)। **पादत्राणं** = जूते/चप्पल (shoes)। **समुपस्थिताः** = उपस्थित (present)। **प्रणामाञ्जलिं** = हाथ जोड़कर (folded hands)। **नेत्रे मीलयित्वा** = आँख मूँदकर (closed eyes)। **समवेतस्वरेण** = सम्मिलित ध्वनि से (by chanting in unison)।

सरलार्थ—प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा में 'वेद प्रत्यक्ष रूप से ब्रह्मा के मुख से निकले हुए अत्यधिक पवित्र दैवीय वाणी हैं' ऐसा माना जाता है। वेद की चार संहितायें हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ये वेद आज विद्वानों के द्वारा विश्व के प्राचीनतम साहित्य के रूप में माने जाते हैं। आप सब स्नान करके, शुद्ध वस्त्रों को धारण करके, जूते बाहर रखकर इस प्रार्थना सभा में उपस्थित हैं। अतः आएँ, हाथों को प्रणाम मुद्रा में करके, आँखें बन्द करके, एकाग्रचित्त से और सम्मिलित स्वर में वेदमंत्रों का उच्चारण करें—

पठितावबोधनम्—

निर्देशः—उपर्युक्तं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देश लिखत।

(उपर्युक्त गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए।)

प्रश्नाः—I. एकपदेन उत्तरत—

(i) पादत्राणं कुत्र स्थापयितव्यम्?

(ii) छात्राः कुत्र समुपस्थिताः सन्ति?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

प्राचीन-भारतीय-ज्ञान परम्परायाम् वेदः किम् मन्यते?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत—

(i) वेदस्य कतिः संहिताः सन्ति?

(अ) एकः (ब) त्रयः (स) चत्वारः (द) पंचमः

(ii) समवेत स्वरेण केषाम् उच्चारणं कृतम्?

(अ) वेदानाम् (ब) वेदमन्त्राणाम् (स) शुद्धवस्त्राणाम् (द) परम्पराणाम्

(iii) समवेत-स्वरेण अर्थं किम्?

(अ) एक स्वरेण (ब) अनेकैः स्वरैः

(स) सम्मिलित-स्वरेण (द) स्फुटित स्वरेण

उत्तराणि— I. (i) बहिः (ii) प्रार्थनासभायाम्

II. प्राचीन भारतीय ज्ञान-परम्परायां वेदः साक्षात् ब्रह्ममुख निःसृता पवित्रतमा दैवी वाक् इति मन्यते।

III. (i) (स) चत्वारः (ii) (ब) वेदमन्त्राणाम् (ii) (स) सम्मिलित-स्वरेण

(2)

मन्त्राणां भावार्थं जानीमः—

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥ १॥ **(पृष्ठ 3)**

पदच्छेदः—संगच्छध्वम् संवदध्वम् सम् वः मनांसि जानताम् देवाः भागम् यथा पूर्वे संजानानाः उपासते।

अन्वयः—(यूयम्) संगच्छध्वं संवदध्वं वः मनांसि संजानताम्। यथा पूर्वे देवाः भागं संजानानाः उपासते।

कठिन-शब्दार्थाः—संगच्छध्वं = मिलकर चलो (may you walk together)। **संवदध्वं** = सहमतिपूर्वक बोलें (may you speak in one voice)। **वः** = तुम्हारे (yours)। **मनांसि** = मनों को (minds)। **जानताम्** = जानें (may you know)। **देवा** = सृष्टि की मूलभूत शक्तियाँ (cosmic forces and celestial phenomena)। **संजानानाः** = एक विचार वाले होकर (being amicable)। **उपासते** = श्रद्धापूर्वक कर्त्तव्य निर्वहण (devotedly performing)। **अभ्युदयम्** = लौकिक उन्नति (elevation and prosperity)।

सरलार्थ—सभी मिलकर चलें, सहमतिपूर्वक बोलें, समानतापूर्वक सभी के मनों को जानें। जैसे ब्रह्माण्डीय वैश्विक शक्तियाँ यज्ञ में अपने भाग को एक साथ लेते हैं उसी प्रकार मनुष्य भी संगठित होकर कार्य करें।

भावार्थ—(वेद के ऋषि 'आङ्गिरस' परमेश्वर के संदेश से मनुष्य को उपदेश देते हैं) हे मनुष्यों! तुम सब (एक साथ चलो) अपने परिवार में, वर्ग में, समाज में, राष्ट्र में और समस्त संसार में मिलकर आगे बढ़ो, सभी आपस में मिलकर समान उन्नति प्राप्त करें। (सहमतिपूर्वक बोलें) आपस में उचित रूप से विचार कर विचारों का आदान-प्रदान करते हुए एक स्वर में बोलें। (वः) तुम्हारे (मनांसि) मनोभावों को (संजानताम्) उचित रूप से जानें। परस्पर मनों में भेद न हो।

(यथा पूर्वे) जैसे सृष्टि के प्रारम्भिक काल में, (देवाः) ब्रह्मा से रचे हुए अग्नि- वायु-सूर्य आदि ब्रह्माण्ड में पाई जाने वाली शक्तियाँ (भागं) सृष्टि निर्माण हेतु यज्ञ की सफलता के लिए अपने-अपने कर्त्तव्य (भाग) को स्वीकार करते हैं (संजानानाः) वैसे ही आपस में उत्तम रूप से, मिलजुल कर (उपासते) अपना-अपना कर्म निर्वाह करें।

उसी प्रकार तुम सब मनुष्य भी अपने कुटुम्ब की, समूह की और संसार की प्रगति में नित्यप्रति मिलजुलकर अपने-अपने कर्त्तव्य का भलीभाँति निर्वाह करो। इस प्रकार तुम सब वैर भाव को छोड़ कर एकत्व भाव में जीवनयापन करो और सभी अपने इच्छित फल को प्राप्त करो।

पठितावबोधनम्—

प्रश्नाः—I. एकपदेन उत्तरत—

(i) काः संगच्छध्वम् संवद्ध्वम् च?

(ii) परस्परम् किम् मास्तु?

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत—

सर्वे किमर्थम् संगच्छध्वम्?

III. निर्देशानुसारम् उत्तरत्—

(i) वेदस्य ऋषिः केन मनुष्यान् उपदिशति?

(अ) ज्ञानेन (ब) एकस्वरेण (स) स्व-कर्त्तव्येन (द) परमेश्वरस्य-संदेशेन

(ii) मनुष्याः किम् परित्यज्य ऐक्यभावेन जीवत?

(अ) कर्त्तव्यम् (ब) स्व-स्व कर्माणि (स) देवान् (द) वैमनस्यम्

(iii) परस्परं सम्यक् ..... कुर्वन्तः एकस्वरेण वदत। (रिक्तस्थान पूरयत)

(अ) मनोकार्यान् (ब) विचार-विनिमयम्

(स) मनोभेदम् (द) वैमनस्यम्

उत्तराणि—I. (i) मानवाः (ii) मनोभेदः

II. सर्वे स्वस्वपरिवारे, गणे, समाजे, राष्ट्रे, विश्वे च मिलित्वा संभूयः अभ्युदयम् साधयत।

III. (i) (द) परमेश्वरस्य-संदेशेन (ii) (द) वैमनस्यम् (iii) (ब) विचार-विनिमयम्

(3)

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥ २॥ **(पृष्ठ 3)**

पदच्छेदः—समानः मन्त्रः समितिः समानी समानम् मनः सह चित्तम् एषाम् समानम् मन्त्रम् अभिमन्त्रये वः समानेन वः हविषा जुहोमि।

अन्वयः—एषां मन्त्रः समानः, समितिः समानी, मनः समानं, चित्तं सह (अस्तु)। वः समानं मन्त्रम् अभिमन्त्रये वः समानेन हविषा जुहोमि।